रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–71, अंक : 23, 11/14 सितम्बर 2014 तदनुसार 29 भाद्रपद सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हृदय से ज्योति को जानना

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन्।
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिरादिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत्।।

-ऋ. 3/26/8

शब्दार्थः हृदाः= हृदय से **मतिम्** =ज्ञान तथा **ज्योतिः**= प्रकाश को **अनु+प्रजानन्** = अनुकूलता से, उत्तमतापूर्वक जानता हुआ **त्रिभिः**= तीन **पवित्रैः**= पवित्रकारकों से **हि**= ही **अर्कम्**= अर्चनीय आत्मा को **अपुपोत**= निरन्तर पवित्र करता है। **स्वधाभिः** = अपनी शक्तियों से **वर्षिष्ठम्**= सबसे उत्तम, श्रेष्ठ बहुमूल्य **रत्नम्**= रत्न **अकृत**= बनाता है, **आत्**= इसके पश्चात **इत्**=ही **द्यावापृथिवी**= द्यावापृथिवी को, संसार को **पर्यपश्यत्**= तिरस्कार से देखता है।

व्याख्या= आत्मा को पवित्र करने का यत्न कर्म है। कर्म से पूर्व ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान हृदय में मिलता है। **हृदा मतिं प्रजानन**- हृदय से ज्ञान और ज्योति को जानता है। ज्ञान के बाद कर्म करता है, साधनों के द्वारा उसे आत्मज्योति का ज्ञान होता है। तब वह आत्मशोधन में लगता है- **त्रिभिः पवित्रैरपुपाद्धयकर्मम्** तीन पवित्र कारकों के द्वारा ही आत्मा को निरन्तर पवित्र करता है। वे तीन पवित्रकारक कठोपनिषत् में संकेतित हुये हैं-

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यु।
ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति।।

-1/1/17

जिसने तीन बार नाचिकेत अग्नि का चयन किया है, जो तीन के साथ संधि कर चुका है, जो तीन कर्म करता है, वह जन्म-मृत्यु= आवागमन को पार कर जाता है। संसारोत्पादक पूजनीय देव को जान कर और धारण करके परम शांति को पाता है।

योगाभ्यास का नाम नाचिकेताग्नि है, उसी से सारे संशय नष्ट होते हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ आश्रमों में-जीवन के तीन स्थलों में जिसने योगाभ्यास किया है। माता, पिता तथा आचार्य इन तीन से जिसने संधि की है अर्थात् इनसे ज्ञान प्राप्त किया है अथवा परमात्मा स्वात्मा तथा मन से जिसने संधि की है, जिसने इन तीन को स्वायत्त कर लिया है और जो यज्ञ, दान और तप तीन कर्मों को करता है (उपनिषद में कहा है-**त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञस्तपो दानम्**= धर्म के तीन तने हैं, यज्ञ, तप और दान), यह मनुष्य संसार के चक्कर से बाहर हो जाता है। इस त्रयी के द्वारा वह जगदुत्पादक परमात्मा को जान लेता है और उसे धारण कर लेता है, वह शांत हो जाता है। शांति के धाम को प्राप्त करके भी शान्ति न मिलेगी क्या? तीन कर्मों से अभिप्राय श्रवण, मनन, निदिध्यासन भी हो सकता है। आत्मशोधन के कारण वह एक रत्न=ब्रह्म-प्राप्तिरूप रत्न को जान लेता है। जिस प्रकार हीरों का स्वामी मिट्टी पत्थर को तुच्छता की दृष्टि से देखता है। ऐसे ही जिसने ब्रह्मानंद रूप रत्न को प्राप्त कर लिया वह संसार को हेय समझता है, उत्तरार्ध में यही बात कही गई है- **वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिरादिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत्।**

किन्तु रत्न ऐसे नहीं बन जाता। रत्न अपने पुरुषार्थ=स्वधा से बनता है। एक स्वधा नहीं, अनेक स्वधाएं लगानी पड़ती हैं, अर्थात् जी-जान से, प्राणपण से इस रत्न को बनाने में लगना पड़ता है। रत्न हाथ आते ही उसे संसार तुच्छ दीखने लगता है। प्रभो! रत्न निर्माण का सामर्थ्य दें।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

स्वाध्याय के लाभ

-ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

निरुक्तकार भगवान् यास्क ने इसीलिए अर्थ का महत्त्व दर्शाते हुए कहा कि वह व्यक्ति भवन के भार को ढोने वाले खम्भे के समान है, निरा ठूंठ है, कि जो वेद को पढ़कर भी उसके अर्थ को नहीं जानता। वेद को केवल घोकता-मात्र है, उसके अर्थ को नहीं जानता; इसके विपरीत जो अर्थज्ञ है, वह समस्त कल्याणों का उपभोग करता है। वह ज्ञान से समस्त मलों को धोकर आनन्दधाम को प्राप्त करता है। यास्क का वह स्वर्णिम वचन हृदयपटल पर लिखने योग्य है- **''स्थाणुरयं भारहारः किलाभूदधीत्य वेदं न विजनात्यर्थम्। योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतापाप्मा॥''** (निरुक्त 1।१८।)

अथवा यूं भी कह सकते हैं कि ''यथा खरश्चन्दनभारवाही'' जैसे गधा चन्दन का बोझ उठाए फिरता है, वैसे ही वह व्यक्ति है जो अर्थ तो जानता नहीं और वेद के ग्रन्थ उठाए-उठाए फिरता है, वेद के दर्शनमात्र करके ही खैर मान लेता है।

अतः यहां स्वाध्याय के तृतीय फल, स्थूल अर्थलाभ न होकर किसी शब्द के आन्तर अर्थ को जान लेना अर्थसिद्धि है। यथा कोई व्यक्ति ''जल'' इस संज्ञा को जानता है, परन्तु उसके अभिधेय पेय, तरल और शीतलत्व गुण वाले पदार्थ को नहीं जानता तो वह भारहार है, निर्जीव संज्ञा को उठाए फिरता है। किन्तु वह संज्ञा-ज्ञान उसकी प्यास नहीं बुझा सकता, क्योंकि जल शब्द को सहस्र बार कहने से अथवा लिख लेने से प्यास नहीं बुझती, जब तक कि मूर्त जल उसके सम्मुख नहीं आ जाता। इसलिए तो यास्क कहते हैं कि **'योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते'** निश्चय जानो कि अर्थज्ञ है वही समस्त कल्याणों का उपभोग करता है।

''अहरहरर्थान् साधयते'' में जहां उक्त भाव है, वहां अर्थ से एक अन्य अभिप्राय भी है और वह है शब्दादि विषय। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, ये पांचों ही विषय अर्थ कहाते हैं। **''प्रार्थ्यते इति अर्थः''** प्राणी द्वारा जिसकी चाहना की जाती है, याचना की जाती है वह अर्थ है। व्यक्ति शब्दादि विषयों की चाह करता है, इसलिए ये भी अर्थ हुए। स्वाध्यायशील व्यक्ति दिनों-दिन शब्द आदि विषयों को साध लेता है, संसिद्ध कर लेता है। वह शब्द को संसिद्ध कर लेता है। जिसने 'रेडियो' का आविष्कार किया है, उसने शब्द विषय को साध लिया, शब्द उसके अधिकार में हो गया। चाहे जब जितना और जैसा उपयोग उनका वह करना चाहता है, कर लेता है। वह शब्द-विषय को अपने हाथ की कठपुतली बना लेता है, स्वयं उसकी कठपुतली नहीं बनता। जिसने 'टेलीविज़न' ईजाद किया, मानो उसने रूप विषय को संसिद्ध कर लिया। अब रूप उसकी मुट्ठी में है, न कि वह रूप की मुट्ठी में, रूप उसके इशारे पर नाचता है, न कि वह रूप के इशारे पर नाचता है। यह तो हुई जगत् के भौतिक तत्त्वों द्वारा विषयों की संसिद्धि। स्वाध्यायशील व्यक्ति यदि चाहे तो अपनी देह के इन श्रोत्र, चक्षु आदि इन्द्रियों द्वारा ही सीधे शब्द-रूपादि विषयों को साध सकता है और यदि इन शब्दादि विषयों की उपलब्धि के लिए उसे स्थूल अर्थ, धन की आवश्यकता होती है तो उसे इसकी भी उपलब्धि हो जाती है, परन्तु यह अर्थसिद्धि है नगण्य। इसलिए मनु ने कहा भी है- **''सर्वान् परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः।''** (मनु० ४।१७) मनुष्य को चाहिए कि उन समस्त अर्थों को त्याग दें, जो स्वाध्याय के विरोधी हैं। यह विचार ले कि मैं ऐसा कोई अर्थ लाभ न करूं, जो स्वाध्याय की ओर मुझे प्रवृत्त ही न होने दे, उसके लिए समय ही न निकल पाए। यदि ऐसा हो तो ऐसे अर्थ को, ऐसी वृत्ति को, ऐसी आजीविका को छोड़ दे।

4. सुखं स्वपितिः स्वाध्यायशील व्यक्ति को लाभ ही लाभ है। एक लाभ तो ऐसा बताया कि उसे सुनकर हर व्यक्ति को स्वाध्याय की इच्छा होगी। वह है चौथा लाभ **''सुखं स्वपिति''** स्वाध्यायशील व्यक्ति चैन की नींद सोता है। संसार के अनेकों सुख हैं, परन्तु नींद से बढ़कर अन्य सांसारिक सुख नहीं। इसके लिए सम्पत्तिशील व्यक्ति पैसा बहाते देखे गये, यह कहते सुने गये हैं कि कोई दो घड़ी चैन की नींद दे दो, हमें सोने की ओषधि दे दो। लोग इस सोने के लिए सोने की अशरफिएं, लुटाते देखे गये, परन्तु हा! हतभाग्य को नींद कहां ? सारी रात करवटें बदलते गुजरती है। उसके भाग्य में नींद कहां ? सोना (धन) है, पर सोना (नींद) नहीं।

आचार्य चरक शरीर के आधारस्तम्भों का वर्णन करते हुए कहते हैं, **''अथु खलु त्रय उपस्तम्भाः। आहारः स्वप्नो ब्रह्मचर्यम''** इस शरीर के तीन आधारस्तम्भ हैं-भोजन, निद्रा और ब्रह्मचर्य। दूसरा स्थान इनमें निद्रा का है। स्वास्थ्य का मुख्य आधार भी तो ये ही तीनों हैं। शायद 'स्वस्थ' और 'स्वप्न' दोनों शब्दों का मूलतः अर्थ एक ही हो। स्व में स्थित होना स्वस्थ है तो स्व को पा लेना स्वप्न है। **स्वमाप्नोति इति स्वप्नः।** जो स्वस्थ है उसे बढ़िया नींद आएगी और जिसे स्वप्न-नींद अच्छी आएगी वह स्वस्थ होगा। स्वप्न का यहां अर्थ सपना नहीं है। स्वप्न का यहां अर्थ अटूट नींद है, जिसमें व्यक्ति अपनी वास्तविक दशा में होता है। जब इन्द्रियां और शरीर के अवयव थक जाते हैं, तो वे अपने-अपने स्थान में बैठ जाते हैं। उनकी बाह्यवृत्तियां समाप्त हो जाती हैं। बस, तब नींद आ जाती है। इसी को स्वप्न कहते हैं। मानो हर किसी इन्द्रिय ने अपने को पा लिया। हर इन्द्रिय ने अपना घर पा लिया और आराम करने चली गई, इसी का नाम निद्रा हो गया। स्वाध्यायशील व्यक्ति **''सुखं स्वपिति''** सुखपूर्वक सोता है, और स्वप्नशील व्यक्ति स्वस्थ होता है। उन्निद्र रोगी से पूछकर देखिए।

महाराज धृतराष्ट्र ने अपने इसी रोग की दुहाई देकर विदुर से पूछा था कि मुझे नींद नहीं आती। संजय ने मुझे अभी तक महाराज युधिष्ठिर का कोई सन्देश नहीं सुनाया, जिससे मेरे शरीर का प्रत्येक अंग जल रहा है, और मुझे उनिन्द्र रोग हो गया है। मुझ सन्तप्त और जागरण से पीड़ित व्यक्ति के लिए आप कोई कल्याणकार उपदेश दें। इस पर महामति विदुर ने कुछ दोष गिनवाए और सान्त्वना भरे शब्दों में कहा, ''राजन्! कहीं इन दोषों से आप पीड़ित तो नहीं हो ? यदि इसमें से एक भी दोष आप में आया हुआ है तो निश्चय जानो आप इस रोग से पीड़ित रहोगे। क्या कहीं अपने से बलवान् के साथ आपका मुकाबला तो नहीं हो गया है ? आपका बल तो क्षीण नहीं हो गया है ? आपकी सेना आदि साधन हीन कोटि की तो नहीं है ? आपकी संपत्ति तो छिन नहीं गई ? काम ने तो नहीं धर दबाया है ? कभी भूले-चूके चोरी की इच्छा तो नहीं की ? अथवा कहीं पराये धन पर तो गृध्रदृष्टि नहीं जा टिकी ? जिसमें ये लक्षण हो प्रायः उन्हीं का उन्निद्र रोग सताया है।'' विदुर ने यह स्वर्णिम उक्ति कही-**''अभियुक्तं बलवता दुर्बलं हीनसाधनम्। हृतस्वं कामिनं चौरमाविशन्ति प्रजागराः॥ कच्चिदेतैर्महादोषैर्न स्पृष्टोसि नराधिप। कच्चिन्न पवित्तेषु गृध्यन विपरितप्यसे॥''** (उद्योग पर्व ३३।११-१४)

विदुर द्वारा कहे इन महादोषों का प्रक्षालन स्वाध्यायशील व्यक्ति बहुत आसानी से कर लेता है। फलतः उन्निद्र रोग का कारण हट जाने से अब वास्तविक सुख की नींद सो सकता है।

ख-५-परम चिकित्सक आत्मनो भवतिः

स्वाध्याय का पंचम लाभ बताते हुए याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्यायी परमचिकित्सक बन जाता है। उसे चिकित्सा सिद्ध हो जाती है। वह अन्यों की चिकित्सा ही नहीं करता, अपितु अपने आपकी चिकित्सा करना जान जाता है। **आत्मनः परमचिकित्सकः भवति-** अपने आपका परमचिकित्सक बन जाता है। उसे अपने रोगों को झटककर परे हटा देने का अभ्यास हो जाता है। वह त्रि-रोगपनयन का माहिर बन जाता है। वह अपने रोग, उनका निदान और उनकी औषध सभी कुछ जान जाता है।

(क्रमशः)

सम्पादकीय.....

शिक्षक दिवस पर विशेष

5 सितम्बर को हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति एवं महान् शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी इस दिन को बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह प्रथम अवसर था जब हमारे देश के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अध्यापकों और बच्चों को सम्बोधित किया। शिक्षक दिवस की पूर्व सन्ध्या पर श्री मोदी जी ने शिक्षकों को सम्बोन्धित करते हुए कहा कि शिक्षा देना नौकरी या पेशा नहीं जीवन धर्म है। उन्होंने कहा कि बदलाव को देखते हुए और नई पीढ़ी को इसके लिए तैयार करने के लिए शिक्षकों को समय से दो कदम आगे रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता बल्कि नई पीढ़ी को सीख देने को हमेशा प्रयासरत रहता है। प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि जब वह पहली बार गुजरात के मुख्यमन्त्री बनें थे तब उनकी दो अभिलाषाएं थी- उनके विद्यालयों के सभी मित्रों और उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों से मुलाकात करना।

अगले दिन शिक्षक दिवस पर बच्चों को सम्बोन्धित करते हुए श्री मोदी जी ने कहा कि हम एक अच्छे विद्यार्थी बनें क्योंकि अच्छा विद्यार्थी बनना भी देश की सेवा है। बच्चों को प्रेरणा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें महापुरूषों के जीवन चरित्रों को पढना चाहिए क्योंकि जीवन चरित्र पढ़ने से हम इतिहास के करीब होते हैं। लड़कियों की शिक्षा के सम्बन्ध में जब उनसे प्रश्न पूछा गया तो उन्होंने बहुत सुन्दर उत्तर देते हुए कहा कि लड़कियों को उनके घर के पास शिक्षा मिलना बेहद जरूरी है क्योंकि मेरा मानना है कि अगर एक लड़का शिक्षा ग्रहण करता है तो वह एक परिवार को शिक्षित करता है लेकिन अगर एक लड़की शिक्षा ग्रहण करती है तो दो परिवारों का भला होता है। एक मायका परिवार और दूसरा ससुराल परिवार भी। उन्होंने कहा कि यदि मैं शिक्षक होता तो सभी को एक समान समझता। एक शिक्षक को सभी बच्चों को बराबर ध्यान देना चाहिए। हर बच्चे में कोई न कोई गुण जरूर होता है। उसे पहचानना ही शिक्षक का मुख्य काम है। श्री मोदी जी ने बच्चों को शिक्षा देते हुए कहा कि मनुष्य को प्रकृति से संघर्ष नहीं करना चाहिए अपितु प्रेम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि छात्रों में योग्यता के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज इस बात का जबाव ढूंढना होगा कि आखिर क्यों अधिक सामर्थ्यवान छात्र शिक्षक नहीं बनना चाहता। राष्ट्र का निर्माण करने के बारे में उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र निर्माण को जनान्दोलन बनाने की कोशिश करें।

माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के उद्बोधन के साथ ही इस वर्ष का शिक्षक दिवस ऐतिहासिक बन गया। ट्विटर पर इसकी प्रशंसा करते हुए डॉ वैशाली चन्द्रा ने ट्विट किया कि कितने भाग्यशाली हैं वे बच्चे जिन्हें मोदी जैसे प्रधानमन्त्री और उन्हें सुनने का अवसर मिला। हमें अपने छात्र जीवन में ऐसा प्रधानमन्त्री क्यों नहीं मिला। इस प्रकार प्रधानमन्त्री जी का बच्चों को और अध्यापकों को सही दिशा की ओर प्रेरित करना सार्थक रहा। जिस प्रकार किसी घर का मुखिया अपने बच्चे को प्रेरित करता है, उसका उत्साह बढ़ाता है तो बच्चे का हौंसला बढ़ता है और उसे लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता मिलती है। इसी प्रकार जब राष्ट्र रूपी परिवार के मुखिया प्रधानमन्त्री जी ने बच्चों और अध्यापकों को मार्गदर्शन प्रदान किया है तो निश्चय ही उन्होंने भी आगे बढ़ने और कुछ करने का संकल्प अवश्य किया होगा।

गुरू और शिष्य का रिश्ता बहुत गहरा है। इसीलिए शिक्षा देने वाले को वैदिक विचारधारा में आचार्य और गुरू कहा गया है और विद्यार्थी या शिष्य को ब्रह्मचारी। आचार्य का अर्थ है- आचारं ग्राहयति इति आचार्यः। इतना ही नहीं कि ब्रह्मचारी को जबानी तौर पर सदाचार की शिक्षा दे, अपितु शिष्य के जीवन में सदाचार को ढाल दे, उसे ऐसी परिस्थिति में रखे कि शिष्य सदाचार को अपने आप ग्रहण करे। वेदों में ब्रह्मचारी और आचार्य शिक्षा के दो बिन्दु हैं और इन दोनों को मिलाने वाली रेखा सदाचार है। अगर आचार नहीं तो आचार्य आचार्य नहीं, शिक्षा शिक्षा नहीं। आज की प्रचलित शिक्षा पद्धति से हम इस प्रकार की उम्मीद नहीं कर सकते कि वे बच्चों का सम्पूर्ण विकास कर दें। आज की शिक्षा तो केवल बड़ी-बड़ी फीसें लेकर बच्चों को परीक्षा पास करने का ठेका लेती हैं। चरित्र निर्माण का उसमें कोई स्थान नहीं है। बच्चा क्या कर रहा है, उसका रहन-सहन, व्यवहार, खान-पान, संगति कैसी है। इन सबसे आज की शिक्षा का कोई मतलब नहीं रह गया है। पहले शिक्षा में चरित्र को महत्ता दी जाती थी परन्तु आज चरित्र को शिक्षा का अंग ही नहीं समझा जाता। प्राचीन शिक्षा पद्धति में बालक के सम्पूर्ण जीवन का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होता था जैसे आज्ञाकारी बनना, माता पिता की सेवा करना, सत्य बोलना, धर्म का पालन करना आदि शिक्षा भी दी जाती थी। आज की शिक्षा पद्धति में अध्यापक और शिष्य के बीच में इतनी दूरी है कि अध्यापक को अपने विषय से मतलब है और विद्यार्थी इन सभी बातों से अनजान है। आज न तो पहले जैसे शिक्षक रहे जो अपने छात्रों को सही संस्कार दे सके और न ही वे छात्र रहे हैं जो शिक्षक को माता-पिता से भी ऊंचा दर्जा देते हुए देव तुल्य मानें।

शिक्षक दिवस का यह अर्थ नहीं कि साल में एक बार बच्चों के द्वारा गुरू की महिमा के ऊपर भाषण दे दिए गए या फिर बच्चों के द्वारा अपने अध्यापकों को कुछ गिफ्ट दे दिए जाए। बल्कि गुरू और शिष्य के बीच साल भर सांमजस्य बना रहे। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह केवल अपने विषय तक ही सीमित न रहकर अपने विद्यार्थियों की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखें। बच्चे का व्यवहार कैसा है, उसकी संगति कैसी है, वह सच बोलता है या झूठ, उसके अन्दर कौन- कौन से गुण हैं और कौन से अवगुण हैं? माननीय प्रधानमन्त्री जी के अनुसार अध्यापक को माली की तरह भूमिका निभाकर बच्चों के जीवन को निखारने का प्रयास करना चाहिए। गुरू देवो भव: के आदर्श को मानने वाले देश में शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए किसी एक दिन की जरूरत नहीं , बल्कि उनका आदर तो हमेशा करना चाहिए। आज फिर विरजानन्द जैसे गुरू और दयानन्द जैसे शिष्य की आवश्यकता है। जिस गुरू ने अपने लिए कुछ नहीं मांगा अपितु राष्ट्र का सुधार करने की प्रतिज्ञा को दक्षिणा के रूप में मांगा और जिस शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया। ऐसे गुरू और शिष्य ही मिलकर राष्ट्र का भविष्य उज्जवल कर सकते है।

अन्त में मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि एक गुरू ही विद्यार्थी के जीवन में प्रकाश कर सकता है। गुरू सूर्य के समान है जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश से राष्ट्र चमक उठता है। आज भी ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जो राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके। अपने विषय से हटकर विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में भी रूचि लें, उसके अन्दर सद्गुणों का विकास करें और विद्यार्थियों का कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने अध्यापकों का एक दिन के लिए नहीं अपितु जीवन भर सम्मान करें क्योंकि गुरू के द्वारा ही उसने जीवन में सफलता को प्राप्त किया है। **-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

आर्य समाज नवांशहर में मनाया श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी आर्य समाज नवांशहर की ओर से प्रधान प्रेम कुमार भारद्वाज की देखरेख में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह मनाया है जिसके तहत शहर के गली मोहल्लों में हवन यज्ञ आयोजित किए गए। रक्षाबंधन से जन्माष्टमी तक चले इस वेद प्रचार सप्ताह के तहत 10 अगस्त को रक्षाबंधन पर आर्य समाज मंदिर में हवन यज्ञ करवाया गया। इसके बाद 11 अगस्त को राहों रोड स्थित डा. आसानंद आर्य माडल सी.से स्कूल में, 12 अगस्त को चंडीगढ़ रोड पर डा. अश्वनी धीर के निवास पर, 13 अगस्त को डब्ल्यू एल आर्य स्कूल में, 14 अगस्त को डीएएन कालेज आफ एजुकेशन फार विमेन में, 15 अगस्त को काईयां मोहल्ला स्थित मनोरंजन कालिया के निवास पर, 16 अगस्त को कुलाम रोड पर प्रो. विकास तेजी के निवास पर तथा 17 अगस्त जन्माष्टमी पर मूसापुर रोड पर रविंदर जोशी के निवास पर हवन यज्ञ किया गया। इस दौरान शास्त्री अमित कुमार ने योगीराज भगवान कृष्ण के जीवन पर प्रकाश भी डाला। इन हवन यज्ञों के दौरान ऋग्वेद के शतक मंत्रों की आहुतियां भी दी गईं। मौके पर आर्य समाज के उप प्रधान विनोद भारद्वाज, सुरेन्दर मोहन तेजपाल, वरिन्दर सरीन, अमित शर्मा, कुलवंत राय शर्मा, अरूणेश शर्मा, विकास कुमार, भास्कर पाठक, ललित शर्मा, राजीव कश्यप, देशबंधु भल्ला, ललित मोहन पाठक, अक्षय तेजपाल आदि उपस्थित रहे।

-अरविंद नारद, प्रचार मंत्री नवांशहर

विश्वकरणीय हमारी संस्कृति

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून

विश्व के सभी मानवों की संस्कृति क्या है ? इसका उत्तर है कि संसार की सबसे प्राचीन एवं सब सत्य विद्याओं सहित जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालने वाली ईश्वर प्रदत्त दिव्य ज्ञान की पुस्तक ''वेद'' सारे विश्व की धर्म, संस्कृति, शिक्षा, संस्कार व सभ्यता का मूल है। वेदों के अनुरूप कार्य, व्यवहार व आचरण ही मानव संस्कृति कहलाता है और इसके विपरीत आचरण मानवेत्तर या पशु संज्ञक कार्य होता है। इस पर विचार करते हैं। संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, सभ्यता आदि शब्द धर्म शब्द के विस्तार प्रतीत होते हैं। धर्म का अर्थ है सत्य गुण, कर्म व स्वभाव को सभी मनुष्यों द्वारा जीवन में धारण किया जाना। सत्य एक व्यापक शब्द है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति (कारण व कार्य प्रकृति दोनों) का संसार में अस्तित्व है जो कि सत्य है। जिस पदार्थ व वस्तु की सत्ता यथार्थ हो वह सत्य होती है और जिसकी सत्ता न हो व जो जिसकी मात्र कल्पना की गई हो, वह असत्य होती है। ईश्वर, जीव व प्रकृति इन तीन तत्वों व पदार्थों का यथार्थ-ज्ञान सृष्टि की आदि या आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद में तथा उसके बाद ऋषियों द्वारा वेदों पर किए गए व्याख्यानों जो ब्राह्मण ग्रन्थ, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में विद्यमान है। वेदादि इन ग्रन्थों में ईश्वर, जीव व प्रकृति विषयों का जो विज्ञान सम्मत निर्भ्रान्त ज्ञान है वह इन शास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन से प्राप्त होता है। क्या यह ज्ञान वेदेतर अन्य धर्म या मजहब के ग्रन्थ कहलाने वाली पुस्तकों से हो सकता है ? ऐसा कदापि नहीं हो सकता क्योंकि यह अनेक विषयों में वेद विरुद्ध होने से सत्य व असत्य से मिश्रित हैं। इन सब ग्रन्थों की महर्षि दयानन्द ने सूक्ष्मता से जांच-पड़ताल की है जिसमें उन्हें सभी मतों के ग्रन्थों में प्रचुर मात्रा में असत्य मान्यताएं दृष्टिगोचर हुई हैं। ऐसी कुछ असत्य, कल्पित व ज्ञान विरूद्ध बातों का दिग्दर्शन उन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में कराया है। इन वेदेतर मतों व मजहबी ग्रन्थों में न तो ईश्वर का और न ही जीवात्मा के सत्य स्वरूप का ज्ञान उपलब्ध होता है। जहां तक प्रकृति के सत्य स्वरूप का ज्ञान है वह भी किसी एक मजहब के ग्रन्थ में भी उपलब्ध नहीं होता। हां, विज्ञान के पास इस विषय में कुछ व अधिकांश सत्य ज्ञान उपलब्ध है। हमें लगता है कि कालान्तर में विज्ञान द्वारा सृष्टि विषयक ज्ञान की खोज वेद वर्णित प्रकृति के ज्ञान को जानकर पूरी हो सकती है। धर्म के अन्तर्गत मनुष्य को किन गुणों को धारण करना है, तो इसका उत्तर है कि धैर्य, क्षमा, इच्छाओं का दमन, अस्तेय अर्थात् चोरी की प्रवृत्ति का त्याग, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धिमत्ता या विवेकशीलता, विद्या, सत्य व अक्रोध आदि गुणों को धारण करना ही धर्म है और इन गुणों से युक्त मनुष्यों द्वारा किये जाने वाले व प्रचारित सभी अच्छे कार्यों की संज्ञा संस्कृति है।

वेदों में मनुष्य जीवन के सभी पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। वेदों के आधार पर ही हमारे ऋषियों ने 16 संस्कारों की रचना की है। बालक व बालिका के जन्म से पहले ही सुसंस्कारों से युक्त सन्तान के लिए माता-पिता को तैयारी करनी होती है। संस्कारों का आरम्भ अन्य मतों व मजहबों की तरह शिशु के जन्म लेने से आरम्भ न होकर गर्भाधान संस्कार व उससे भी पूर्व किया जाता है। वैदिक संस्कारों से सन्तान को सुभूषित करने के लिए हमारे यहां गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति विकसित व प्रचलित की गई थी। गुरूकुलीय शिक्षा पद्धति की एक विशेषता यह है कि वैदिक व आर्ष गुरूकुलों में आर्ष व्याकरण, चारों वेदों व इतर शास्त्रों के ज्ञानियों द्वारा अध्ययन कराया जाता है। भाषा संस्कृत होती है जिसमें हमारा सारा प्राचीन साहित्य व शास्त्र विद्यमान है। ब्रह्मचारी व विद्यार्थी को गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराकर व वेदोपदेश देकर उसका अध्ययन आरम्भ होता है। वह गुरुकुल में स्नातक बनने तक प्रातः व सायं ब्रह्मयज्ञ, सन्ध्या, ईश्वरोपासना व अन्य चार यज्ञों को वैदिक व वैज्ञानिक विधि से करता है। इसमें कहीं किसी प्रकार का अन्धविश्वास व पाखण्ड नहीं होता। केवल आत्मा को परमात्मा से संयुक्त करना ही सन्ध्या या उपासना का उद्देश्य है व इसे सफल करने का प्रयास ही ''सन्ध्या'' व ''ध्यान'' की क्रिया है। यह पंचमहायज्ञ भी वस्तुतः पांच प्रकार के प्रमुख संस्कार हैं और इसी से बालक व बालिका, ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी अथवा विद्यार्थी व विद्यार्थिनी सुसंस्कृत होते हैं। इसके विपरीत बालक-बालिकाओं के जीवन को हम संस्कृति रहित, संस्कृति के विपरीत या अल्प मात्रा में संस्कृतियुक्त जीवन की संज्ञा देते हैं। स्नातक बनने तक शिष्य व शिष्या वैदिक संस्कारों से समलंकृत व अभ्यस्त हो जाते हैं। हमें इन्हें संस्कारित व भारतीय वैदिक संस्कृति के अनुरूप युवा कह सकते हैं। इनमें पंचमहायज्ञों के संस्कार तो होते ही हैं अपितु इसके साथ यह सदाचारी, धर्मात्मा, साहसी, निर्भय, वीर, सत्यानुरागी, सत्यमानी, सत्याचारी, ईश्वर भक्त, गुरूभक्त, मातृ-पितृ आचार्य भक्त, देश भक्त, समाज-सेवक, परोपकारी व सच्चे शिक्षक होते हैं। ऐसे सदाचारी युवक व युवती हमारी आजकल की अन्य शिक्षा पद्धतियों में नहीं बनते। आजकल की अन्य शिक्षा पद्धतियों में नहीं बनते। आजकल का उच्च शिक्षित व्यक्ति तो ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप को परिभाषित भी नहीं कर पाता। वह आधुनिक शिक्षा में दीक्षित होने पर भी इन दोनों सत्ताओं के यथार्थ स्वरूप से अनभिज्ञ रहता है। अब रहा आजकल के नवीन विषयों जिसमें एक या अधिक भाषाओं का ज्ञान, विज्ञान, गणित, कला, समाज, राजनीति, अर्थशास्त्र, इलैक्ट्रोनिक्स, कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग, चिकित्सा व अन्य सभी प्रकार के आधुनिक ज्ञान व विज्ञान आदि विषयों के अध्ययन की बात है तो हमें वैदिक गुरूकुलों में इन विषयों के अध्ययन में कहीं कोई कठिनाई दिखाई नहीं देती। कठिनाई केवल गुरूकुलों में साधनों के अभाव के कारण हैं जहां सरकारी सहायता का न दिया जाना है। गुरूकुल में बिना साधनों के ही वह कार्य होता है जो किसी चमत्कार से कम नहीं है। यदि सरकारी विद्यालयों की तरह से गुरूकुलों को आर्थिक व अन्य सहायता मिले तो यह तो कार्य कर सकते हैं जिसे कल्पनातीत कह सकते हैं। गुरूकुल का विद्यार्थी इन प्राचीन व आधुनिक सब विषयों को बहुत अच्छी तरह पढ़ व सीख सकता है। हमारा अनुमान है कि वह प्रयत्न करने पर आजकल के विद्यार्थियों से कुछ अधिक ही सीखेगा क्योंकि गुरूकुल में माता-पिता व परिवार के सदस्यों से पृथक रहने से उसके पास समय अधिक होता है और उसके मन में आजकल के युवकों की तरह अनाप-शनाप विचार कुप्रभावित कर अपना दास नहीं बनाते। इस प्रकार आधुनिक विषयों का भी साथ-साथ अध्ययन करने से गुरूकुल का विद्यार्थी आज के समय की आवश्यकता के अनुरूप सभी गुणों से युक्त व अवगुण-शून्य बलवान व मेधावी युवा बनाया जा सकता है। ऐसा युवक ही भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि होता है। हम उदाहरण के रूप में राम, कृष्ण, पाणिनी, यास्क, पतंजलि, कपिल, कणाद, गौतम, बादरायण व्यास, बाल्मीकि, पाणिनी, दयानन्द, चाणक्य, शंकर, श्रद्धानन्द, गुरूदत्त विद्यार्थी, पंडित लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द, मेहता जैमिनी आदि को प्रस्तुत कर सकते हैं। यह भारतीय संस्कृति के आदर्श थे। इनका अध्ययन व कार्य भारतीय वैदिक संस्कृति के मार्गदर्शक हैं और इसके विपरीत जो कार्य, क्रियाएं व अन्य बातें समाज में हो रही हैं वह सब संस्कृति के विपरीत कही जाएंगी।

इससे पूर्व कि हम अन्य संस्कारों की चर्चा करें, जो संस्कृति का ही अंग हैं, हम वैदिक संस्कृति के मुख्य आधार चार आश्रमों की चर्चा करते हैं। वैदिक मान्यताओं के आधार पर चार आश्रमों में विभाजित किया गया है जिनमें सामान्यतः प्रथम 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य, इसके बाद दूसरा 50 वर्ष की वय तक गृहस्थ, तीसरा वानप्रस्थ जो आयु के 50 से 75 वर्षों के मध्य होता है तथा इसके बाद शेष आयु पर्यन्त चौथा सन्यास आश्रम है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कुरीतियों का कुचक्र तोड़ना ही होगा

-ले० पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक उत्तराखण्ड, गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र की प्रगति एवं समुन्नति में उसकी चिन्तन पद्धति का सबसे बड़ा योगदान होता है। जो समाज सत्य के सिद्धान्तों पर चलते हैं वे ही अमर रहते हैं। वास्तव में सत्य-असत्य में मूलगत भेद क्या है ? असत्य वस्तु, असत्य विचार, संस्था के भीतर ही उसका तोड़ने का तत्व रहते हैं। इसी को हम अर्न्तद्वन्द्व कहते हैं। असत्य पेट में पड़ा अन्त: विरोध उसको धीरे-धीरे फोड़ता है और असत्य के भीतर छिपा हुआ सत्य अपने पैने पन से उभर आता है। सत्य के पेट में कोई दुविधा नहीं होती, क्योंकि उसमें कोई अर्न्तद्वन्द्व नहीं होता। जहां भीतर दोनों ही वही संघर्ष होता है।

आर्य समाज का लक्ष्य सत्य का प्रतिपादन करना व उस पर चलना है और विश्व यदि टिका हुआ है तो यह सत्य के आधार पर टिका हुआ है। आर्य समाज एक वैचारिक और सुधारवादी संगठन है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने सत्य और अन्धविश्वासों को समाप्त करने के लिए अपना जीवन ही बलिदान कर दिया था। आर्य समाज की स्थापना के अर्ध शताब्दी बाद तक आर्य समाज ने प्रत्येक प्रकार की कुरीतियों को मिटाने में अहम भूमिका निभाई थी और विश्व में आर्य समाज ने अपनी पहचान बनाई। किन्तु जैसे-जैसे मानव समाज की सोच व कार्य कुरीतियों की ओर बढ़ने लगे थे, तो आर्य समाज को अधिक आन्दोलित होना चाहिए था किन्तु आर्य समाज शिथिल होता चला गया। और जो आर्य समाज एक स्वयं में आन्दोलन था वह सिमट कर धर्म सम्प्रदाय बन गया। अपने मूल लक्ष्य से भटक गया है।

पूवर्जों की दुहाई देकर केवल उनका इतिहास बचाने से उसके अनुयायी वंशधर सम्मान के अधिकारी नहीं हो सकते। अपितु अपने पूर्वजों के कार्यों को बिना रूके थमें आगे बढ़ने से ही सच्चे अनुयायी हो सकते हैं। वर्तमान में दृष्टि उठाकर देखते हैं तो व्यक्ति ही नहीं सम्पूर्ण मानव समाज की अदूरदर्शिता की गतिविधियों में संलिप्त है। व्यक्तिगत व सामाजिक धार्मिक चरित्रों में से समझदारी ईमानदारी सत्याचरण व पुरूषार्थ दिनों दिन घटती जा रही है साथ ही इस अभाव से समूचे समाज में अनौचित्य का दौर बढ़ रहा है। फलत: वर्तमान विपन्नता भयावह होती जा रही है। इस बढ़ोत्तरी का दुष्परिणाम निकट भविष्य में सर्वनाशी विभीषिकाओं का रूप धारण कर सकता है, इस ओर में उपेक्षा बढ़ाना भी बरतना भी अनौचित्य बढ़ाता है उससे व्यक्ति और समाज दोनों का अहित होता है।

आर्य समाज के सन्यासी वर्ग व उपदेशकों को आज अत्यन्त चिन्ता करके आर्य समाज के गिरते ग्राफ को देखकर उसके विकास का मार्ग टूटना होगा। आज आर्य समाज को गतिशील होने की अति आवश्यकता है। आर्य समाज यज्ञों में सिमट गया है आर्य समाज के भवनों में कैद हो गया है और जैसे सनातन धर्म के मन्दिरों में मूर्ति पूजा होती है वैसे ही आर्य समाजों में हवन करके इतिश्री समझ रहे है। वो भी कुछ सफेद बाल वाले आर्य समाज में देखे जाते हैं। वेद प्रचार खण्डानात्मक उपदेश, कुरीतियों को मिटाने के कार्यक्रमों की आर्य समाजों में बहुत गिरावट आ गयी है और आर्य समाज स्वयं दिनों दिन प्रभावशाली व्यक्तियों सिद्धान्तहीन, आर्यों पदलोलुपता के लिए संघर्षरत सदस्यों की कुरीतियों में सिमटता जा रहा है।

जबकि अन्य धर्म सम्प्रदायों के प्रचार कार्य से निरन्तर टी. बी. में मोहल्ले-मोहल्ले में समाज को अन्धविश्वास व कुरीतियां परोसी जा रही है। अन्धविश्वासों की दुकानदारियां धड़ल्ले में चल रही है। सम्पूर्ण राष्ट्र अन्धविश्वासों व रूढ़ीवादियों व स्वार्थी नेतृत्व की चपेट में आया हुआ है और चारों ओर भ्रष्टाचार अनैतिकता व अनाचार के बारूद के ढेर पर सारी दुनिया बैठी हुई है। इस विनाश को विभीषिका को केवल सत्य मार्गी आर्य समाज ही रोक सकता है। विकृत संस्कार विकृत मन: स्थिति विपन्न परिस्थितियों में कौन बचाएगा ? कोई चमत्कार या फरिश्ता आसमान से नहीं उतरेगा।

सम्पूर्ण संसार के मानवों का वर्तमान युग सत्य का आधार खो चुका है। कुरीतियां सत्य का गला घोटने से बढ़ती है।

आर्य समाज के मन्दिरों में यज्ञों व संगठनों की विभिन्नता हो रही है। आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव आधुनिक संगीतों से परोसे जा रहे हैं। खण्डन मण्डन की रीति समाप्त हो गयी है। सामाजिक कुरीतियों का विरोध समाप्त हो गया है। एक प्रकार से आर्य समाज व उसका नेतृत्व संसार के अन्धविश्वासों के कुएं में शनै:-शनै: घुल मिल रहा है।

हमारे चारों ओर से जो धार्मिक अन्धविश्वास, कदम-कदम पर सामाजिक कुरीतियों व पाश्चात्य संस्कारों की प्रचलन व टी. वी. चैनलों पर अन्धविश्वास परोसने की धूल जो चारों ओर आर्य समाज व मानव समाज पर पड़ रही है। इस धूल को झाड़ना ही होगा।

आज हम यज्ञ के मन्त्रों में इदन्नमम व संध्या के मनसा परिक्रमा के मंत्रों एभ्यो अस्तु यो द्वेष्टि एवं आदि के मंत्रों के अर्थों को न जान कर तोता रटन कर रहे हैं। हमें आर्य बनना होगा, आर्य समाजी नहीं और महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि में जो सिद्धान्त दिये हैं उस पर मज़बूती से चलना होगा। साप्ताहिक सत्संगों में सपरिवार जाना होगा और सम्पूर्ण समाज में फैले हुए अन्धविश्वासों से टकराना होगा। हम आर्यों को अपने परिवारों के विवाह संस्कारों में सादगी लानी होगी। सोलह संस्कारों का प्रचलन करना होगा। यदि हम ऋषि के सच्चे भक्त है तो मेरे पूर्ण लेख पर विचार करने का कष्ट करें।

आर्य समाज बरनाला में श्रावणी उपाकर्म एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला के प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी जी के कुशल नेतृत्व में वेद प्रचार के सम्बन्ध में दिनांक, 09.08.2014 दिन शनिवार को श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज में वहां के छात्राओं में वैदिक विचारधारा जागृत करने के लिए वैदिक परम्परा के अनुसार श्रावणी उपाकर्म (रक्षा-बन्धन) का पर्व वैदिक रीति से श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इसमें बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं के स्टाफ, छात्रगण के अतिरिक्त अन्य गणमान्य सदस्यों को आमंत्रित किया गया। सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए, कैंसर जैसी भयंकर बीमारी के उन्मूलन में डेरा सच्चा सौदा का विशेष योगदान प्रदान करने के कारण उन्हें सम्मान चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। शहर के सम्मान योग्य जिलाधीश महोदय ने अपने वक्तव्य में वैदिक रीति से इस कार्यक्रम को सम्पन्न करने के लिए समूह उपस्थित सदस्यों को बधाई दी। श्री भारत भूषण मैनन, प्रिंसीपल नीलम शर्मा, श्रीराम कुमार सोबती ने सभा को सम्बोधित किया। अन्त में डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने समूह उपस्थित सदस्यों का धन्यवाद करते हुए उन्हें ऋषि कृत्त ग्रन्थों को पढ़ने के लिए प्रेरणा दी। शान्ति पाठ से पूर्व वैदिक प्रचार में रूचि दिखाने वाले छात्र/छात्राओं को बाल सत्यार्थ प्रकाश प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिनांक 17.08.2014 दिन रविवार को बरनाला की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं की शमूलियत एवं सहयोग से आर्य समाज बरनाला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व श्रद्धापूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री जी के मार्गदर्शन में अग्निहोत्र (यज्ञ) सम्पन्न हुआ। मंत्री तिलक राम के मंच संचालन में सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्राओं ने ईश्वर स्तुति प्रार्थना, उपासना के सभी मंत्र सस्वर वाचन किया। पर्व के अनुकूल वैदिक मर्यादा अनुसार छात्र/छात्राओं ने भजन/प्रवचन प्रस्तुत किए। श्री शिव कुमार वत्ता, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री अजीत 'पंछी', श्री राम लखन आर्य ने मंच द्वारा सुन्दर-सुन्दर भजन का गान किया। श्री हरमेल सिंह जोशी, श्री भारत भूषण मैनन, पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने योगीराज श्री कृष्ण के महान कार्यों से अवगत करवाया। अन्त में प्रतिभागी छात्र/छात्राओं को बाल सत्यार्थ प्रकाश प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। प्रधान-डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने वैदिक रीति से इस कार्यक्रम को मनाने के लिए बधाई दी। श्री कृष्ण जी के आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरणा दी। संगठन सूक्त के पाठ के साथ शान्ति पाठ किया गया। वरिष्ठ उप प्रधान श्री हरमेल सिंह जोशी जी के सौजन्य से प्रसाद वितरण किया गया।

-तिलक राम

पृष्ठ 4 का शेष- विश्ववरणीय.....

ब्रह्मचर्य आश्रम में गुरू के सान्निध्य में रहकर सभी विद्याओं का अर्जन, दूसरे आश्रम में गृहस्थ जीवन व उसके कर्त्तव्यों का वेदानुसार निर्वाह, वानप्रस्थ में परिवार से पृथक वन व अन्य किसी स्थान पर आश्रम में पत्नी सहित या अकेले रहकर अध्ययन, अध्यापन, चिन्तन, मनन, सन्ध्या, उपासना, योगाभ्यास आदि में संलग्न रहना तथा अन्तिम चतुर्थ सन्यास आश्रम में देश व समाज के कल्याण के लिए अपने ज्ञान व योग्यता का बिना किसी लोभ व आर्थिक प्रयोजन के प्रचार व प्रसार करना होता है। इन सभी 4 आश्रमों के कर्त्तव्य व व्यवहार निर्धारित हैं। इनका पालन व आचरण ही संस्कृति है। सामान्य, सरल व साधारण धोती, कुर्ता धारण कर व शुद्ध भोजन कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति में एकनिष्ठ संलग्न रहना ही वैदिक व भारतीय संस्कृति है। बिना किसी उद्देश्य के मनोरंजन, सुरम्य स्थानों की यात्रा करना व अनावश्यक घूमना-फिरना, अनेक प्रकार के अन्य कार्यों को करना जो हमारे जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य ''भोग व अपवर्ग'' अथवा ''धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष'' में सहायक होने के स्थान पर इनके विपरीत हों, धर्म व संस्कृति में नहीं आता। इससे हम अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं और यह हमारे जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में बाधक होते हैं जिससे फिर हम बन्धनों में फंस कर जन्म-मरण व सुख-दुःख के चक्र में उलझ कर अपने जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य से दूर हो जाते हैं और दुःख पाते हैं। अन्य देश व समाजों में क्योंकि जीवन के उद्देश्य का ही किसी को पता नहीं है और न वहां चार आश्रमों का ही ताना-बाना है, अतः वहां का जीवन व व्यवहार सुख व दुःख के चक्र में फंस कर इस मानव जीवन के उद्देश्य से भटक कर इस जीवन को एक प्रकार से बर्बाद करना ही है।

अब हम 16 संस्कारों पर कुछ चर्चा करते हैं। 16 संस्कार हैं- गर्भाधान, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह व गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम प्रवेश संस्कार व अन्त्येष्टि कर्म एवं विधि। इन संस्कारों का उद्देश्य मानव जीवन को समुन्नत करना है। हम यहां इतना और बता देना चाहते हैं कि मनुष्य एक भौतिक शरीर एवं चेतन अनादि, नित्य, अजन्मा व अमर जीवात्मा का युग्म है। हमारे जीवन का उद्देश्य शारीरिक उन्नति के साथ बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति सहित सामाजिक उन्नति करना है। शरीर की उन्नति अच्छे भोजन अर्थात् युक्ताहारविहार से होती है तथा बौद्धिक व आत्मिक उन्नति ईश्वरोपासना आदि अच्छे संस्कारों, वेद-विद्या के अर्जन, अभ्यास व तदनुकूल आचरण से होती है। यह भी ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि आज भारतीय व विश्व समाज अनेक अन्धविश्वासों, अज्ञानमूलक कृत्यों, रूढ़ अनावश्यक रीति-रिवाजों व पर्वों, कर्मकाण्डों, पाखण्डों तथा मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जन्म जाति व ऊंच-नीच की भावनाओं आदि से ग्रसित है। शिक्षा व्यापार बन चुकी है। नैतिक मूल्य समाप्ति पर हैं। हमारे शिक्षित कहे जाने वाले सम्भ्रान्त व्यक्तियों का आचरण, व्यवहार व चरित्र भी स्वार्थ व मिथ्याचारों से परिपूर्ण है। शिक्षा अपना महत्त्व खो चुकी है या खो रही है। संस्कृति में इन मिथ्याचारों का कोई स्थान नहीं है। यह मिथ्याचार संस्कृति की विकृतियां हैं। जीवन में मिथ्याचार व विकृतियां कभी भी संस्कृति व इसका अंग नहीं बन सकती हैं। संस्कृति वही है जो वेदों से पोषित है व वैदिक मूल्यों के अनुकूल, अनुरूप व उसकी पूरक है। देश काल व परिस्थितियों के अनुसार हमारे जीवन व कार्य, व्यवहार व आचरण में न्यूनाधिक हो सकता है परन्तु वह वेदाचरण के अनुकूल होना चाहिए, विपरीत नहीं। तभी वह आचरण, व्यवहार या जीवन शैली संस्कृति शब्द से ग्रहण की जा सकती है।

संस्कारों के सन्दर्भ में हम यह भी विचार करते हैं कि ईश्वर से हमें पांच ज्ञानेन्द्रियां मिली है। हम देखकर, सुनकर, सूंघकर, चखकर व स्पर्श द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं। 16 संस्कारों में जो मन्त्र बोले जाते हैं, उनका अपना महत्त्व है। आज दुर्दैव से हम संस्कृत व संस्कृति से दूर चले गए हैं। हम इतने अयोग्य हैं कि हमें ईश्वर की वाणी जो हमारे लिए मातृभाषा से भी बढ़कर है, उसे जानते व समझते ही नहीं हैं। इसी कारण मुख्यतः हम संस्कार विहीन हैं। वैदिक काल में ऐसा नहीं था। तब सब संस्कृत जानते थे और अधिकांश व सभी वेद मन्त्रों के सही व यथार्थ अर्थ भी जानते थे। इसके साथ सभी संस्कारों में कुछ क्रियाएं भी की जाती हैं, उनका भी ज्ञान न हमें है और न आज के अधिकांश पुरोहित व विद्वानों को ही पूर्णत व विशेषतः है। इस कारण हम वैदिक संस्कारों से पूरा लाभ नहीं ले पा रहे हैं। हमें अपना जीवन सफल करने के लिए वेदों के मन्त्रों के अर्थों को जानना होगा और उसके अनुसार ही आचरण व व्यवहार करना होगा। वही आचरण व व्यवहार हमारा धर्म भी है व संस्कृति भी। विद्या व शिक्षा से युक्त कर्म व आचरण का नाम ही संस्कृति है जिससे किसी का किंचित भी अपकार न हो और स्वयं व अन्यों को अधिकाधिक लाभ हो। इसका हमें ध्यान रखना है।

हम संसार पर दृष्टि डालते हैं तो हमें संसार मत, मजहब, सम्प्रदाय, रीलिजियन आदि में विभक्त दिखाई देता है। तर्क व वेद के प्रमाणों के आधार पर संसार के सभी लोगों का धर्म व मत एक ही सिद्ध होता है अर्थात् संसार के सभी लोगों का धर्म एक ही है और वह है ''सत्याचरण'' करना जो कि ''वेदाचरण'' का पर्यायवाची है। अपने स्वार्थों व अज्ञान आदि के कारण मत व सम्प्रदायों के आचार्य अपनी मिथ्या मान्यताओं व सिद्धान्तों को छोड़ना नहीं चाहते जिससे सारे विश्व में अशान्ति फैली हुई है। आजकल मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों व परम्पराओं को भी संस्कृति के नाम से ग्रहण किया जाता है जो कि उचित नहीं है। इससे भी समाज व मनुष्यता को हानि पहुंच रही है। आज संसार के सभी मतों व सम्प्रदायों के एकीकरण की आवश्यकता है जिसका आधार सत्य होना चाहिए। इसी कारण आधुनिक युग के वेदों के सर्वोपरि विद्वान महर्षि दयानन्द ने सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करने, अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में तत्पर रहने, सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य व्यवहार करने व संसार का उपकार करने को ही धर्म माना है। सत्य पर आधारित धर्मानुसार व्यवहार ही सत्य संस्कृति है अथवा वेदानुसार सत्य-आचरण का करना ही धर्म व संस्कृति है। संस्कृति का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा में जैसा ज्ञान होगा व उसके संस्कार जिस प्रकार के होंगे वैसा ही मनुष्य का आचरण होगा। अतः संस्कारों, वेदाध्ययन एवं विद्याध्ययन से आत्मा को शुद्ध व पवित्र कर उसे ज्ञानवान बनाना व श्रेष्ठ आचरण करना ही संस्कृति है। हम गीता के 3 पदों ''योगः कर्मसु कौशलम्'' के आधार पर भी यह कहना चाहते हैं कि किसी भी कार्य को सर्वोत्तम रूप से करना ही संस्कृति है। हमें यह भी अनुभव होता है कि ''योगः कर्मसु कौशलम्'' विश्व वरणीय श्रेष्ठ संस्कृति को परिभाषित करता प्रतीत हो रहा है। सन्ध्या, उपासना, यज्ञ, हवन, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ, गृहस्थ के सभी कार्य, सभी सामाजिक व देश भक्ति के कार्य, सभी कार्यों में सत्य की प्रतिष्ठा का होना व हमारा प्रत्येक कार्य विद्वानों व ज्ञानियों के परामर्श से होता है तो वह संस्कृति की परिसीमा में होता है।

हम समझते हैं कि संसार में वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रचार की आज सबसे अधिक आवश्यकता है जिससे प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्त्तव्य का ज्ञान हो सके और उसे वह ज्ञानपूर्वक कुशलता से सम्पन्न करें। यही संस्कृति है। विषय के अनुरूप यजुर्वेद के सातवें अध्याय का चौदहवें मन्त्र को विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। मन्त्र है-''अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्य्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम। सा प्रथमा संस्कृतिर्विशववारा स प्रथम वरूणो मित्रोऽअग्निः॥ अर्थ- हे योगविद्या सीखने की इच्छा रखने वाले प्रशंसनीय गुणों से युक्त शिष्य! हम अध्यापक लोग तेरे लिए, जिस पदार्थ से शुद्ध पराक्रम बढ़े, उसके समान व उस अखण्ड योग विद्या से उत्पन्न हुए धन की दृढ़-बुद्धि व शिक्षा के देने वाले हों। जो यह पहली सब सुखों के स्वीकार करने योग्य (संस्कृति) विद्या, सुशिक्षा, जनित नीति है वह तेरे लिए इस जगत में सुखदायक हो और हम लोगों में जो श्रेष्ठ अग्नि के समान सब विद्याओं से प्रकाशित है वह सबसे प्रथम तेरा अर्थात् शिष्य का मित्र हो। भावार्थ- इस मन्त्र में उपमा अलंकार है। योग विद्या में सम्पन्न शुद्धचित्त युक्त योगियों को योग्य है कि जिज्ञासुओं के लिए नित्य योग और विद्यादान देकर उन्हें शारीरिक और आत्मबल से युक्त किया करें।''

मन्त्र में महर्षि दयानन्द ने संस्कृति शब्द का अर्थ सुशिक्षा जनित नीति किया है, यह मनन करने योग्य है। संस्कृति के पालन से सभी सुखों की प्राप्ति होती है तथा विद्या-सुशिक्षा जनित सिद्धान्त को जीवन में धारण करने से जीवन सभी सुखों से पूर्ण होकर, धर्म अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में सफल होता है। ईश्वर करे कि हम सब श्रेष्ठ वेदानुयायीजन विद्या व सुशिक्षा रूपी श्रेष्ठ ज्ञानाग्नि को अपना मित्र बनाकर सब सुखों को प्राप्त हों। पाठकों से निवेदन है कि वह अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करायें।

लाला वजीर चंद मंगला नहीं रहे

बठिंडा की आर्य शिक्षण संस्थाओं, आर्य समाज व जिला आर्य समाज के लम्बे अरसे तक रहे प्रधान लाला वजीर चंद मंगला अपनी जीवन यात्रा पूरी करके 91 वर्ष की आयु में कुछ समय के लिये रूग्ण रहने के पश्चात शनिवार 6.9.2014 को उनका देहावसान हो गया। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित किया। उनके दो सुपुत्र हैं। बड़ा बेटा डा. के.के.मंगला पंजाब विश्वविद्यालय में कामर्स विभाग के अध्यक्ष पद से सेवा निवृत्त हैं और छोटा बेटा स्वर्गीय श्री ओ.पी. मंगला डी.ए.वी. कालेज में कामर्स विभाग के अध्यक्ष थे और वह आर्य समाज के प्रधान भी रहे। उनकी तीन पोतियां पीएचडी एवं पोता एमबीए है। उन्होंने अपना शरीर आदेश अस्पताल बठिंडा को दान किया है। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर स्वामी सूर्यदेव जी विशेष तौर पर पधारे। उनकी अन्तेष्टि संस्कार में आर्य समाज बठिंडा के सभी सदस्य प्रधान श्री गौरी शंकर, महामंत्री श्री नवनीत कुमार अन्य अधिकारीगण तथा समस्त आर्य समाज के सदस्य एवं आर्य माडल सी.सै.स्कूल के सदस्य उपस्थित थे। उनका श्रद्धांजलि समारोह 14.9.2014 दिन रविवार को आर्य समाज के प्रांगण में अढाई बजे से साढ़े तीन बजे तक रखा गया है।

-पी.डी. गोयल संरक्षक आर्य समाज चौक बठिंडा

आर्य समाज बरनाला का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला में दिनांक 31.08.2014 को साप्ताहिक सत्संग के तुरन्त बाद वर्ष 2014-15 के लिये वार्षिक चुनाव आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री भारत भूषण मेनन तथा आर्य समाज बरनाला के आर्य विद्वान श्री हरमेल सिंह जोशी की अध्यक्षता में प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम कोषाध्यक्ष श्री सुखबिन्द्र लाल मारकंडा ने गत वर्ष 2013-14 का आय व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। उसके बाद प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी ने गत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर सुनाइ।

उपस्थित सभासदों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। तत्पश्चात श्री भारत मोदी, श्री बसन्त गोयल और श्री शिव कुमार बत्ता ने प्रधान पद के लिये डा. सूर्यकान्त शोरी का नाम प्रस्तुत किया। इनके कुशल नेतृत्व एवं वैदिक विचारधारा से ओत प्रोत तथा आर्य समाज के प्रति समर्पण भाव को देखते हुये उपस्थित सभासदों ने प्रसन्नता के साथ इनका अनुमोदन किया और इस प्रकार सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिये डा. सूर्यकान्त शोरी को चुनते हुये इन्हें अपनी नई कार्यकारिणी के गठन के लिये अधिकार भी दिये गये। नव निर्वाचित प्रधान डा. सूर्य कांत शोरी ने सबका धन्यवाद करते हुये कहा कि आर्य समाज की वैदिक गतिविधियों के प्रचार एवं प्रसार हेतु सबके सहयोग से यथा संभव प्रयास किये जाएंगे। प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी ने अपनी कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार किया।

प्रधान श्री सूर्यकान्त शोरी, उप प्रधान श्री हरमेल सिंह जोशी, उप प्रधान श्री भारत भूषण मेनन, मंत्री श्री तिलक राज, कोषाध्यक्ष श्री सुखबिन्द्र लाल मारकंडा, अधिष्ठाता आर्य वीर दल एवं पुस्तकालयाध्यक्ष श्री राम चन्द्र आर्य, वेद प्रचार मंत्री श्री बसन्त शोरी, अन्तरंग सदस्य श्री केवल जिन्दल, श्री भारत मोदी, श्री शिव कुमार बत्ता, श्री राम कुमार सोबती, श्री सूरज भान गर्ग, श्री राजेश गांधी। इसके पश्चात श्री भारत भूषण मैनन ने सभी सभासदों का धन्यवाद करते हुये आर्य समाज बरनाला के प्रति सहयोग एवं योगदान के लिये भूरि भूरि प्रशंसा की। शांति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही को विराम दिया गया।

-तिलक राज मंत्री-आर्य समाज बरनाला

एस.एन.आर्य हाई स्कूल को एक लाख का दान

आर्य समाज तपा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री प्रमोद कांसल बरनाला ने अपने माता पिता की स्मृति में एक लाख से भी अधिक लागत से

एस.एन.आर्य हाई स्कूल तपा क्लास रूम का निर्माण करवाया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सभा के सदस्य श्री सी.मारकंडा तथा आर्य समाज तपा के अध्यक्ष डा. राज कुमार शर्मा ने उनकी दान प्रवृत्ति धन्यवाद करते हुये कहा कि वह अपनी इस परम्परा को भविष्य में भी जारी रखेंगे और इसी तरह के परोपकार के कार्य करते रहेंगे।

एसएन आर्य हाई स्कूल तपा को पंखे दान किये

श्री दीपक जिन्दल संगरूर ने भी एस.एन.आर्य हाई स्कूल तपा को तीन पंखे 10 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के कमरे में लगवाने के लिये दान रूप में भेंट किये। एस.एन.आर्य हाई स्कूल तपा के सैक्रेटरी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री सी.मारकंडा जी ने इनका धन्यवाद किया।

अध्यापक ही इंसान का सही मार्गदर्शक : प्रेम भारद्वाज

डीएएन कालेज आफ एजुकेशन फार विमेन में अध्यापक दिवस पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज मुख्य मेहमान के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री प्रेम भारद्वाज, कमेटी प्रधान विनोद भारद्वाज, सचिव प्रो. एसके बरूटा की ओर से संयुक्त रुप से ज्योति प्रज्जवलित कर की। इस दौरान छात्राओं ने सरस्वती वंदना की। इस मौके पर अपने सम्बोधन में मुख्यतिथि प्रेम भारद्वाज व कालेज कमेटी प्रधान विनोद भारद्वाज ने कहा कि डा. राधा कृष्णन ने एक अच्छे अध्यापक होने के अलावा राष्टपति बन कर एक मिसाल पैदा की थी। उनकी ओर से किए गए कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने गरीब शिक्षकों व शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वालों की आर्थिक सहायता करने के लिए एक कल्याण कोष की स्थापना की जिससे देश में शिक्षकों को कोई समस्या न हो और वे स्वतंत्र होकर विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करते रहे। उन्होंने कहा कि शिक्षा को श्रेष्ठ बनाने के लिए इंसान जितनी मेहनत करता है वह इसमें उतना ही श्रेष्ठ होता जाता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में आर्य संस्था का अहम रोल है। भविष्य में जो भी अच्छे अध्यापक बनने के लिए आते हैं उनको गुरुओं को मान सम्मान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुरानी सोच व नई विधियों की सोच को सभी नए अध्यापकों को अपने भीतर रखना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने अध्यापकों को गिफ्ट भी दिए। मंच संचालन छात्रा प्रियंका व दीप्ती ने किया। इस मौके पर कार्यकारी प्रिंसीपल गुरविंदर कौर, दोआबा आर्य सी.सै. स्कूल के प्रिंसीपल राजिंदर गिल, आरके आर्य कालेज प्रिंसीपल डा. एस.के बारिया, सुरिंदर मोहन तेजपाल, वरिंदर सरीन, प्रो. तरुणा, कविता, प्रो. के गोयल, विकास तेजी, मीनाक्षी ग्रोवर, रजनी बाला भी मौजूद रहीं।

-अरविंद नारद, प्रचार मंत्री आर्य समाज नवांशहर

वेदवाणी

सत्य की विजय

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमो अवति हन्त्यासत्॥

विनय–मनुष्य जब वास्तविक ऊंचे ज्ञान को विवेकपूर्वक जानना चाहता है, जब वह सत्यज्ञान की खोज में होता है, तब उस विवेकशील पुरुष के समाने सत् और असत् दोनों स्पर्धा करते हुए आते हैं। दोनों उसके सामने अपनी–अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहते हैं, दोनों उसके हृदय पर अधिकार करना चाहते हैं। कभी सत् प्रबल होता है, कभी असत् प्रबल होता है। इस प्रकार देर तक यह स्पर्धा, यह लड़ाई, चलती रहती है। जब उस पर किन्हीं कुटिल और असत्य से काम निकालने वाले लोगों का प्रभाव पड़ता है। तब वह असत्यता को ही उत्तम समझ लेता है, परन्तु जब वह सत्याग्रन्थों को पढ़ाता है या सच्चे, निष्कपट, पवित्र लोगों के सङ्ग में आता है तब सत्य की महत्ता को समझने लगता है। पुनः किसी बलवान्, नीतिनिपुण पुरूष का प्रभाव उसे यह सिखला देता है कि संसार में असत्य के बिना काम नहीं चलता है। पुनः कोई महान् सत्यनिष्ठ पुरूष उसे सत्य का पुजारी, सत्य के पीछे पागल बना देता है। इस प्रकार सत् और असत् दोनों प्रकार के वचन (ज्ञान) उस पर प्रभाव जमाने के लिए स्पर्धा करते रहते हैं, परन्तु मनुष्य को यह पता होना चाहिए (और विवेकी पुरूष को यह धीरे–धीरे पता हो जाता है) कि मनुष्य के हृदय में बैठा हुआ सोम परमेश्वर तो सदा सत् की, अकुटिल की ही रक्षा कर रहा है और असत् का नाश कर रहा है जो लोग इस सत्य से अभिज्ञ हो जाते हैं वे तब सोम की शरण में जाना चाहते हैं और जो सचमुच सर्वोच्च सत्य ज्ञान की खोज में लगे हुए हैं उन्हें इसी हृदयस्थ सोम देव की शरण में जाना चाहिए, तभी उन्हें अपना अभीष्ट मिलेगा, क्योंकि सब भूतों के हृद्देश में बैठे हुए सोम ईश्वर के आश्रय को मनुष्य जितना ही अधिक सर्वतोभाव से ग्रहण करता है, उतना ही उसमें असत्य का नाश होकर सत्य और निष्कपटता बढ़ती जाती है और उसमें सुविज्ञान भरता जाता है, अतः इस सत् और असत् की लड़ाई में मनुष्य जितना ही सोम का आश्रय लेगा, उतनी ही जल्दी उसमें सत्य की विजय होगी और उसे शान्ति मिलेगी। प्रत्येक जीव की इस सत्–असत् की स्पर्धा में जल्दी या कितनी ही देर में अन्ततः सोम परमेश्वर द्वारा विजय तो सत्य की ही होनी निश्चित है, क्योंकि वे सोम सदा सत्य का, सत्य वचन का, सत्य व्यवहार का रक्षण कर रहे हैं और असत्य का, असत्य भाषाण का, असत्य व्यवहार का हनन कर रहे हैं।

साभार–वैदिक विनय, प्रस्तुति–रणजीत आर्य

गुरूकुल आश्रम आमसेना में नैष्ठिक दीक्षा लेकर दो नवयुवकों ने लिया आजीवन समाज सेवा का संकल्प

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर भारतवर्ष भी अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, भाषा, संस्कार तथा आदर्श को भूलता जा रहा है। आज के नवयुवक–नवयुवतियां भी इसी रंग में रंगकर भेड़चाल में चलते जा रहे हैं। इसी दुर्दशा को देखते हुए पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरियाणा प्रान्त से आकर ओड़िशा प्रान्त के एक अकालग्रस्त कालाहाण्डी (वर्तमान नुआपड़ा) ज़िले में गुरूकुल आश्रम आमसेना नामक बृहद् संस्था की स्थापना की। आज इस गुरूकुल से अन्य 18 संस्थाए संचालित हैं। स्वामी जी ने अपने प्रभाव से अनेक नवयुवकों को नैष्टिक दीक्षा देकर देश, धर्म की रक्षा का संकल्प करवाया है तथा सभी नवयुवक स्वामी जी के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए गत 10 अगस्त को ब्र. राकेश कुमार आर्य तथा ब्र. प्रवीण आर्य (पुनीराम) ने श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबन्धन) के दिन आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर सर्वस्व देश को सौंप दिया। इस गरिमामय कार्यक्रम में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, डॉ. कुञ्जदेव मनीषी एवं बहुत से विद्वान् एवं अतिथिगण उपस्थित थे। अन्त में स्वामी धर्मानन्द जी ने दोनों ब्रह्मचारियों के इस साहसिक कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।